

Hindi Comprehension Grade VII

दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ आई, शायद नहाकर आई थीं, उसी झागवाले जल में। पतले-दुबले स्नेह-सने शरीर पर सफ़ेद किनारीहीन धोती, सन-से सफ़ेद बालों के सिरों पर सद्यः टपके हुए जल की शीतलता। आते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँठ खोल किसी अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली, माथे पर लगाई। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। हाँडी में पानी आया कि नहीं? उसे पीपल की छाल से छौंका कि नहीं? खिचड़ी में मूँग की दाल एकदम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे बाहर से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं।

प्रश्न- दादी माँ कहाँ से आई थी ?

प्रश्न- दादी के बालों का रंग कैसा था ?

प्रश्न- दादी ने सर, पेट क्यों छुए ?

प्रश्न- दादी बुखार (ज्वर) को उतारने के लिए क्या - क्या उपाए करती थी ?

प्रश्न- दादी घरवाले को कैसे प्रश्न पूछकर परेशान कर देती थी ?